मुख्य अतिथि

प्रो. (डॉ.) राज कुमार आचार्य
मान. कुलगुरु
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

संरक्षक

प्रो.(डॉ.) संजय तिवारी
मान. कुलगुरु
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

संयोजक

डॉ. सुशील मंडेरिया
कुलसचिव
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

आयोजन समिति

डॉ. हेमंत सिंह केशवाल, विभागाध्यक्ष, बी.एड. (विशेष शिक्षा)
डॉ. शिवांगी दुबे, अतिथि शिक्षक
डॉ. जगदीश मसोदकर, अतिथि शिक्षक
डॉ. गोविंद डेहरिया, अतिथि शिक्षक
डॉ. बी. गोपाल कृष्ण, वरिष्ठ सलाहकार, सीका
सुश्री निधि रावल गौतम , वरिष्ठ सलाहकार, सीका
डॉ. राजेश सक्सेना, प्रोग्रामर, आई टी विभाग
इंजी. राजेश कुमार पटेल, विश्वविद्यालय अभियंता

INSTITUTION'S INNOVATION COUNCIL
(Ministry of HRD Initiative)

SUPPORTED & CATALYSED BY NCSTC, DST, GOVT. OF INDIA

Madhya Pradesh Council Of Science & Technology

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय,भोपाल

(NAAC द्वारा 'A' ग्रेड प्रत्यायित)

एमपीबीओयू आईआईसी और इन्क्यूबेशन सेंटर

द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी), डीएसटी, भारत सरकार, नई दिल्ली केंद्र

एवं

एम.पी. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी),भोपाल

द्वारा उत्प्रेरित एवं समर्थित

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025

थीम

विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना

समन्वयक
डॉ.प्रज्ञा ओझा
प्रभारी, आईआईसी एवं इन्क्यूबेशन सेंटर
म.प्र.भो. (मु.) वि.,भोपाल

सह-समन्वयक
डॉ. शैलेन्द्र सिंह
समन्वयक, आईआईसी
म.प्र.भो. (मु.) वि.,भोपाल

दिनांक- 10-11 मार्च, २०२५
उद्घाटन समारोह - प्रातः 11 बजे
स्थान- विश्वविद्यालय सभागार, म.प्र.भो. (मु.) वि.,भोपाल

28 फरवरी 1928 को रमन प्रभाव की खोज करने वाले प्रथम भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता सर सी. वी. रमन की स्मृति में

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय (MPBOU), भोपाल की स्थापना 1991 में हुई थी। यह विश्वविद्यालय मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा को बढ़ावा देता है, विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित वर्गों के लिए। एमपीबीयूओ स्नातक, स्नातकोत्तर, पीजी डिप्लोमा, डिप्लोमा और प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इसकी शिक्षा प्रणाली में प्रिंट सामग्री, ऑनलाइन संसाधन, व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम और डिजिटल लर्निंग शामिल हैं। राज्यभर में फैले अध्ययन केंद्रों के माध्यम से यह विश्वविद्यालय सुलभ शिक्षा सुनिश्चित करता है। एमपीबीयूओ ई-लर्निंग, एमओओसी और डिजिटल प्लेटफॉर्म को विकसित कर तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को भी प्रोत्साहित कर रहा है।

राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी)

राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (NCSTC) की स्थापना 1982 में भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) के तहत की गई थी। इसका उद्देश्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रसार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास और विज्ञान संचार को बढ़ावा देना है। एनसीएसटीसी विज्ञान मेले, कार्यशालाएँ, विज्ञान लेखन, रेडियो-टीवी कार्यक्रम, विज्ञान फिल्में और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। यह राष्ट्रीय विज्ञान दिवस और राष्ट्रीय गणित दिवस जैसे अभियानों का भी संचालन करता है। परिषद विज्ञान शिक्षकों और संचारकों को प्रशिक्षित कर समाज में वैज्ञानिक सोच और नवाचार को बढ़ावा देती है, जिससे विज्ञान और समाज के बीच संवाद मजबूत हो सके।

एम.पी. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी), भोपाल

मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST) की स्थापना 1981 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा की गई थी। यह परिषद राज्य में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास, अनुसंधान, नवाचार और प्रसार को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है। एमपीसीएसटी विज्ञान संचार, पर्यावरण अध्ययन, जैव प्रौद्योगिकी, खगोल विज्ञान, पारंपरिक ज्ञान प्रणाली और अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है। यह विभिन्न परियोजनाओं, कार्यशालाओं, वैज्ञानिक संगोष्ठियों और नवाचार कार्यक्रमों का आयोजन करता है। परिषद का उद्देश्य वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना, स्थानीय समस्याओं के वैज्ञानिक समाधान खोजना और राज्य के तकनीकी विकास में योगदान देना है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, जो हर साल 28 फरवरी को मनाया जाता है, भारत के विज्ञान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है - 1928 में सर सी.वी. रमन द्वारा रमन प्रभाव का पता लगाना। इस वर्ष, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 का विषय "विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना" है, जो भारत के विज्ञान और वैश्विक नेतृत्व को आगे बढ़ाने की दिशा में युवा दिमागों के योगदान पर प्रकाश डालता है।
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की शुरुआत 1986 में हुई थी, जैसा कि राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद (NCSTC) द्वारा प्रस्तावित किया गया था। यह दिन सीवी रमन की क्रांतिकारी खोज का जश्न मनाता है जिसके कारण उन्हें 1930 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार मिला। रमन प्रभाव, या वह घटना जिसमें अणुओं द्वारा बिखरने पर प्रकाश की तरंगदैर्ध्य में परिवर्तन होता है, स्पेक्ट्रोस्कोपी और भौतिक विज्ञान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसने वैश्विक स्तर पर विज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का उद्देश्य

निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ हर साल भारत में मुख्य विज्ञान समारोहों में से एक के रूप में मनाया जाता है।

- लोगों के दैनिक जीवन में वैज्ञानिक अनुप्रयोगों के महत्व के बारे में व्यापक रूप से एक संदेश फैलाना।
- मानव कल्याण के लिए विज्ञान के क्षेत्र में सभी गतिविधियों, प्रयासों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करना।
- विज्ञान के विकास के लिए सभी मुद्दों पर चर्चा करना और नई तकनीकों को लागू करना।
- देश में वैज्ञानिक सोच वाले नागरिकों को अवसर देना।
- लोगों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना।

थीम

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का विषय, "विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना", भारत को बेहतर भविष्य की ओर ले जाने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान के साथ युवा दिमागों को तैयार करने की आवश्यकता पर जोर देता है। यह विषय युवाओं को विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेता बनने के लिए सशक्त बनाने पर चर्चा और संगोष्ठियों का एजेंडा निर्धारित करता है।

सब थीम

सभी के लिए विज्ञान

आयोजन की गतिविधियाँ

- आमंत्रित व्याख्यान
- सर चंद्रशेखर वेंकट रमन पर लघु वृत्तचित्र
- प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
- रंगोली प्रतियोगिता